एक ततैया मधुमक्खी नहीं होता

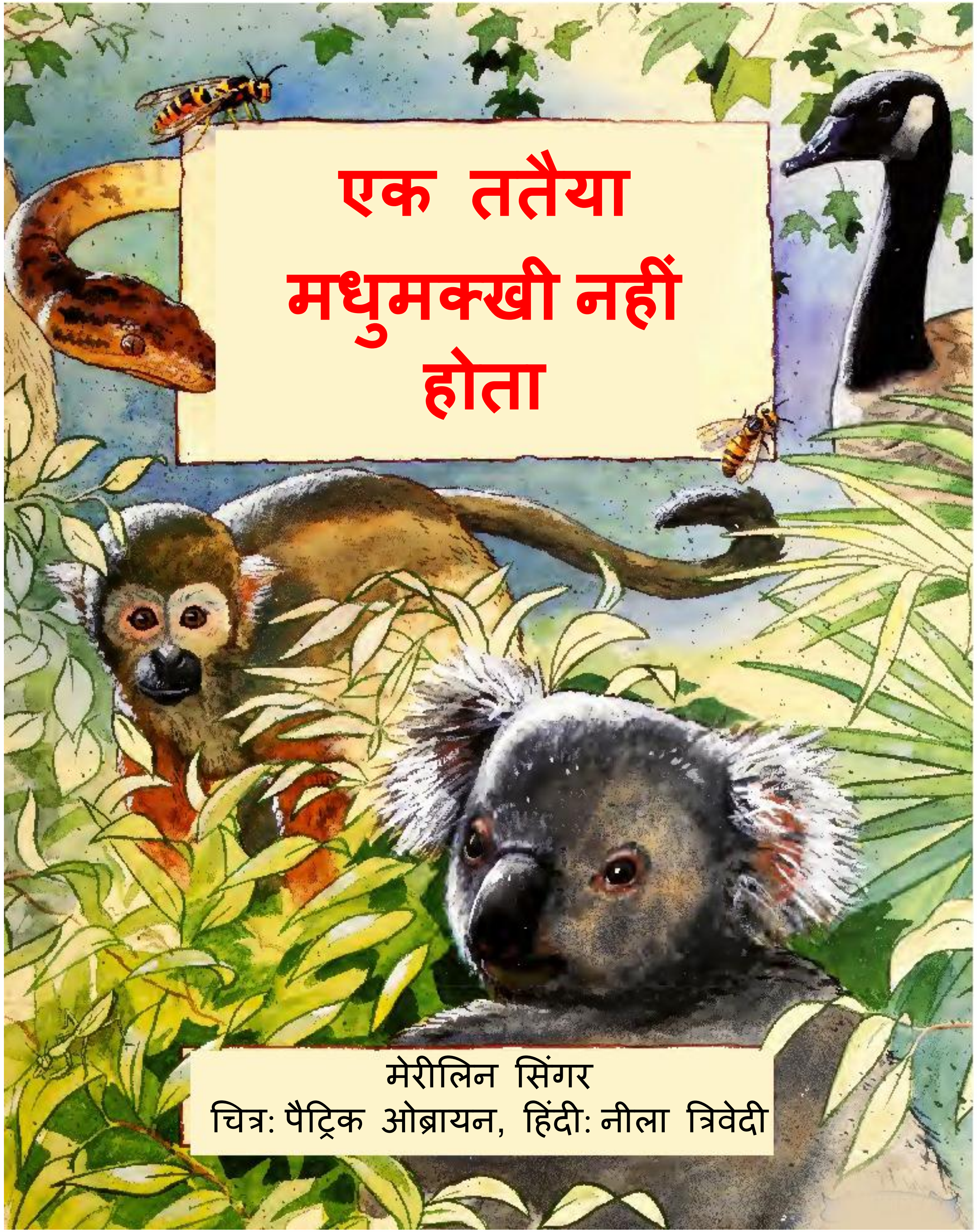

मेरीलिन सिंगर
चित्र: पैट्रिक ओब्रायन, हिंदी: नीला त्रिवेदी

एक ततैया मधुमक्खी नहीं होता

मेरीलिन सिंगर
चित्र: पैट्रिक ओब्रायन
हिंदी: नीला त्रिवेदी

परिचय

अधिकांश लोग बिल्ली और कुत्ते के बीच का अंतर आसानी से पहचान लेते हैं। लेकिन कुछ अन्य जानवर ऐसे होते हैं, जिनके बीच का फर्क इतना साफ नहीं होता। इसी वजह से लोग अक्सर उन्हें आपस में भ्रमित कर बैठते हैं। इन अंतरों को पहचानने के लिए आपको ध्यान से देखना और सुनना पड़ता है। कभी-कभी तो आपको अपनी बाकी इंद्रियों का भी इस्तेमाल करना होता है।

जब आप जानवरों को ध्यान से देखते हैं, तो आपको समझ आता है कि वे आकार, आकृति, रंग, त्वचा, आवाज़ और व्यवहार में एक-दूसरे से कितने अलग होते हैं। यही ध्यानपूर्वक निरीक्षण आपको यह भी सिखाता है कि एक ततैया और मधुमक्खी में क्या अंतर है, या फिर एक मकड़ी और कीट में, और एक स्तनधारी और पक्षी में क्या भेद होता है।

इस किताब में बताए गए कुछ जानवर आपको अपने ही आसपास मिल सकते हैं। कुछ चिड़ियाघर में देखने को मिलेंगे, और कुछ ऐसे हैं जिन्हें देखने के लिए आपको दूर-दराज़ देशों की यात्रा करनी पड़ेगी। लेकिन एक बात सबमें समान है— ये सभी बेहद आकर्षक हैं। जैसे-जैसे आप इन जीवों के बारे में सीखते जाएंगे, वैसे-वैसे आप पशु जगत की इस अद्भुत विविधता को और भी गहराई से समझ पाएंगे और उसका आनंद उठा पाएंगे।

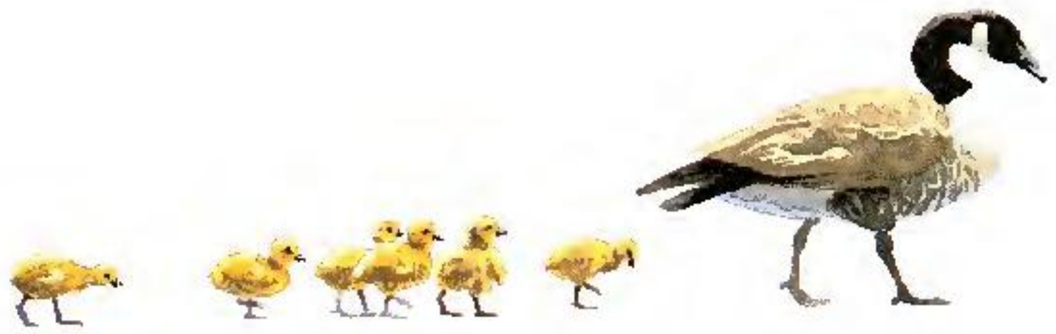

ततैया, मधुमक्खी नहीं होता

तुम्हारी आइसक्रीम कोन पर बैठा वह छोटा सा कीड़ा देखने में मधुमक्खी जैसा लग सकता है। लेकिन ध्यान से देखो—वह शायद एक पीला ततैया है! कभी-कभी मधुमक्खियाँ और ततैया एक जैसे दिखते हैं, लेकिन वास्तव में उनमें कई महत्वपूर्ण अंतर होते हैं। मधुमक्खियाँ आमतौर पर रोएँदार (बालों वाली) होती हैं, जबकि ततैया चिकना और चमकदार होता है। अधिकांश मधुमक्खियाँ अपने पैरों पर पराग (pollen) इकट्ठा करके ले जा सकती हैं, लेकिन ततैया ऐसा नहीं कर सकता। शहद वाली मधुमक्खी, जिसे अक्सर पीला ततैया समझ लिया जाता है, केवल पराग और फूलों का रस खाती है। वहीं दूसरी ओर, पीला ततैया की पसंद थोड़ी अलग होती है—

वह कीड़े-मकोड़े और छोटे जानवर खाती है, जिन्हें वह अपने बच्चों को खिलाती है। और हाँ, उसे मीठा भी बहुत पसंद है! फल, सोडा, और... तुम्हारी आइसक्रीम कोन भी!

कुछ मधुमक्खियाँ सामाजिक होती हैं, जैसे कि शहद वाली मधुमक्खी। वे मोम से बने छत्तों में रहती हैं और शहद बनाती हैं। इसी तरह, कुछ ततैया भी सामाजिक होती हैं... पीला ततैया अपने घोंसले कागज़ या अन्य पदार्थों से बनाती है, और वे छत्तों में नहीं रहते जैसे मधुमक्खियाँ रहती हैं। एक मधुमक्खी के छत्ते में कई काम करने वाली मधुमक्खियाँ होती हैं और एक रानी मधुमक्खी होती है, जो अंडे देती है। रानी मधुमक्खी कभी भी छत्ते को छोड़कर बाहर नहीं जाती। लेकिन ततैया का संसार थोड़ा अलग होता है—उनके घोंसले में कई रानियाँ हो सकती हैं, और वे अपने बच्चों के लिए भोजन ढूँढने बाहर जाती हैं।

अपने घर की रक्षा के लिए, मधुमक्खियाँ और ततैया दोनों ही डंक मार सकती हैं। लेकिन अक्सर ततैया मधुमक्खियों से ज्यादा जल्दी डंक मारता हैं। इसका एक कारण यह हो सकता है कि जब शहद वाली मधुमक्खी किसी को डंक मारती है, तो वह उसके बाद मर जाती है। लेकिन पीला ततैया के साथ ऐसा नहीं होता—वह जिंदा रहता है और कई बार डंक मार सकता है! यह बात ततैया के लिए तो अच्छी है... लेकिन आपके लिए बिल्कुल भी नहीं।

एक मकड़ी, कीट नहीं होती

जब लोग कहते हैं, “ओह, मुझे कीड़े बिल्कुल पसंद नहीं हैं,” तो अक्सर उनका मतलब मकड़ियों से होता है। लेकिन सच तो यह है— मकड़ियाँ कीट नहीं होतीं। वे एक अलग समूह से संबंधित होती हैं, जिसे अरैक्निड्स (arachnids) कहा जाता है। कीटों के छह पैर होते हैं और उनके शरीर के तीन मुख्य हिस्से होते हैं। लेकिन अरैक्निड्स—जिनमें मकड़ियाँ, किलनी (ticks), घुन (mites) और बिच्छू (scorpions) शामिल हैं— उनके आठ पैर होते हैं और शरीर के केवल दो हिस्से होते हैं। अधिकांश कीटों के पंख और एंटीना (antennae) होते हैं, लेकिन मकड़ियों में ये नहीं होते। हाँ, उनके पास एक खास चीज़ होती है— पेडिपाल्प्स (pedipalps), जो उनके जबड़ों के पास छोटे पैरों जैसे दिखते हैं। मकड़ियाँ इनका उपयोग भोजन संभालने और प्रजनन में करती हैं।

हर कीट अलग-अलग प्रकार का भोजन खाता है। कुछ, जैसे पतंगे और तितलियाँ, रस चूसने वाले मुख रखते हैं और मुख्य रूप से फूलों का रस और पेड़ों का रस खाते हैं। दूसरे, जैसे ड्रैगनफ्लाई, भृंग, टिड्डे और तिलचट्टे, चबाने वाले मुख रखते हैं और पौधों से लेकर अन्य जीवों तक, कई प्रकार का भोजन खा सकते हैं। लेकिन मकड़ियाँ अलग होती हैं— वे सभी मांसाहारी होती हैं, फिर भी वे चबा नहीं सकतीं। वे अपने शिकार को अपने नुकीले दाँतों से ज़हर डालकर पहले लकवाग्रस्त करती हैं और मार देती हैं, फिर उसके अंदरूनी हिस्सों को चूस लेती हैं।

हालाँकि, बहुत कम मकड़ियों का ज़हर इंसानों के लिए खतरनाक होता है, और वे तब तक नहीं काटतीं जब तक उन्हें परेशान न किया जाए। असल में, मकड़ियाँ हमारे लिए बहुत उपयोगी होती हैं। वे कई हानिकारक कीड़ों को मारकर खा जाती हैं— वे कीड़े जो सच में लोगों की ज़िंदगी को परेशान कर सकते हैं।

चमगादड़, पक्षी नहीं होता

बहुत से लोगों को कभी भी चमगादड़ को पास से देखने का मौका नहीं मिलता। वे उन्हें दूर से देखते हैं और अक्सर उन्हें पक्षियों समझ लेते हैं। लेकिन अगर आप ध्यान से देखें, तो आपको समझ आ जाएगा कि चमगादड़ पक्षी नहीं, बल्कि एक स्तनधारी है—और वह भी ऐसा स्तनधारी जो उड़ सकता है! अधिकांश स्तनधारियों के शरीर पर बाल या फर होते हैं। चमगादड़ का पूरा शरीर भी बाल से ढका होता है— सिवाय उसके पंखों के। उसके पंख असल में बहुत लंबे, जालदार हाथ और भुजाएँ होते हैं। वहीं दूसरी ओर, पक्षियों के शरीर पर पंख होते हैं, और उनके पंख बिल्कुल अलग होते हैं— वे हाथ जैसे नहीं होते। चमगादड़ का मुँह भी पक्षियों से अलग होता है। चमगादड़ों के दाँत होते हैं, जैसे अन्य स्तनधारियों के होते हैं। लेकिन पक्षियों के दाँत नहीं होते— उनके पास चोंच होती है।

सभी पक्षी अंडे देते हैं। उन अंडों से बच्चे (चूजे) निकलते हैं, जिन्हें उनके माता-पिता अलग-अलग तरह का भोजन खिलाते हैं।

चमगादड़ अंडे नहीं देते। वे सीधे जीवित बच्चों को जन्म देते हैं, और सभी स्तनधारियों की तरह अपने बच्चों को अपने शरीर में बनने वाला दूध पिलाते हैं। कुछ चमगादड़ कीड़े खाते हैं, कुछ फल खाते हैं, और कुछ मछलियाँ भी खाते हैं।यहाँ तक कि एक प्रकार का चमगादड़—वैंपायर बैट—जानवरों को काटकर उनका खून भी चाटता है। लेकिन चाहे उनका भोजन कुछ भी हो, एक बात सभी में समान है— वे रात में ही भोजन करते हैं। उन्हें रात्रिचर (nocturnal) कहा जाता है। केवल कुछ ही पक्षी, जैसे उल्लू और नाइटहॉक, रात में जागते हैं। अधिकांश पक्षी दिन के समय सक्रिय रहते हैं। इसलिए, अगर आप सूर्यास्त के बाद अपने आसपास किसी पक्षी के आकार का कुछ उड़ता हुआ देखें, तो वह शायद पक्षी नहीं होगा। ज्यादा संभावना है कि वह एक चमगादड़ हो— जो किसी मच्छर का शिकार कर रहा है, वही मच्छर जो शायद आपको अपना भोजन बनाना चाहता हो!

एक व्हेल, मछली नहीं होती

मछलियाँ पानी के अंदर रहती हैं। यदि आप किसी मछली को बहुत देर तक पानी से बाहर रखें, तो वह मर जाएगी। व्हेल भी पानी के अंदर रहती हैं। लेकिन यदि आप किसी व्हेल को बहुत देर तक पानी के अंदर रखें, तो वह भी मर जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि व्हेल मछली नहीं होती — वह एक स्तनधारी जीव है। मछली पानी को अपने अंदर लेकर उसे गलफड़ों से गुज़ारती है, ताकि उससे ऑक्सीजन प्राप्त कर सके। व्हेल के पास गलफड़े नहीं होते। सभी स्तनधारियों की तरह उसके पास फेफड़े होते हैं। इसलिए, भले ही व्हेल पानी में रहती हो, उसे साँस लेने के लिए पानी की सतह पर आना पड़ता है। वह अपने साँस लेने वाले छिद्र (blowhole) से हवा अंदर लेती है, जो वास्तव में उसके सिर के ऊपर स्थित एक बड़े नथुने जैसा होता है। व्हेल का फव्वारा (spout) वह हवा होती है, जिसे वह अपने सांस लेने वाले छिद्र से बाहर निकालती है। कुछ व्हेलों के पास एक सांस लेने वाला छिद्र होता है, जबकि कुछ के पास दो होते हैं।

दूसरे स्तनधारियों की तरह, व्हेल का मस्तिष्क भी बहुत विकसित होता है। लेकिन अन्य स्तनधारियों के विपरीत, उनके शरीर पर बाल नहीं होते; उनकी त्वचा चिकनी होती है। यदि किसी मछली का मस्तिष्क कम जटिल होता है, तो उसका शरीर शल्कों (scales) से ढका होता है। व्हेल और मछली के बीच एक और अंतर यह है कि व्हेल गर्म रक्त वाली (Warm-blooded) होती है।

सभी स्तनधारियों की तरह, उसके शरीर का तापमान लगभग हमेशा एक समान बना रहता है चाहे उनके आसपास कितना भी गर्म या ठंडा वातावरण क्यों न हो। लेकिन मछली ऐसी नहीं होती— मछली ठंडे खून वाली होती है। उसका शरीर का तापमान पानी के तापमान के साथ बदलता रहता है।

व्हेल और मछली, दोनों के शरीर पानी में तेज़ी से तैरने के लिए बने होते हैं। उनका आकार ऐसा होता है कि वे पानी को आसानी से चीरकर आगे बढ़ सकें। व्हेल के पास हाथ जैसे फ्लिपर्स होते हैं, जो उसे दिशा बदलने और संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। उसकी पूँछ पर चौड़े, बिना हड्डी वाले फ्लूक होते हैं, जो ऊपर-नीचे हिलते हैं। मजबूत मांसपेशियों से जुड़े ये फ्लूक व्हेल को आगे बढ़ाते हैं और दिशा भी देते हैं। मछलियों के पास फ्लिपर्स या फ्लूक नहीं होते। उनके पास पंख होते हैं, जो आमतौर पर हड्डीदार होते हैं और दाएँ-बाएँ हिलते हैं। मछली तैरने की शक्ति अपने पूरे शरीर से प्राप्त करती है, जबकि व्हेल अपनी ताकत मुख्य रूप से अपनी पूँछ से लेती है। कभी-कभी मछलियाँ पानी से बाहर छलांग लगाती हैं, और उनकी पूँछ की एक झलक दिखाई देती है। लेकिन अगर आप पानी से बाहर निकलती हुई एक बड़ी और शक्तिशाली पूँछ देखें, तो बहुत संभव है कि आपने अभी-अभी एक व्हेल देखी हो!

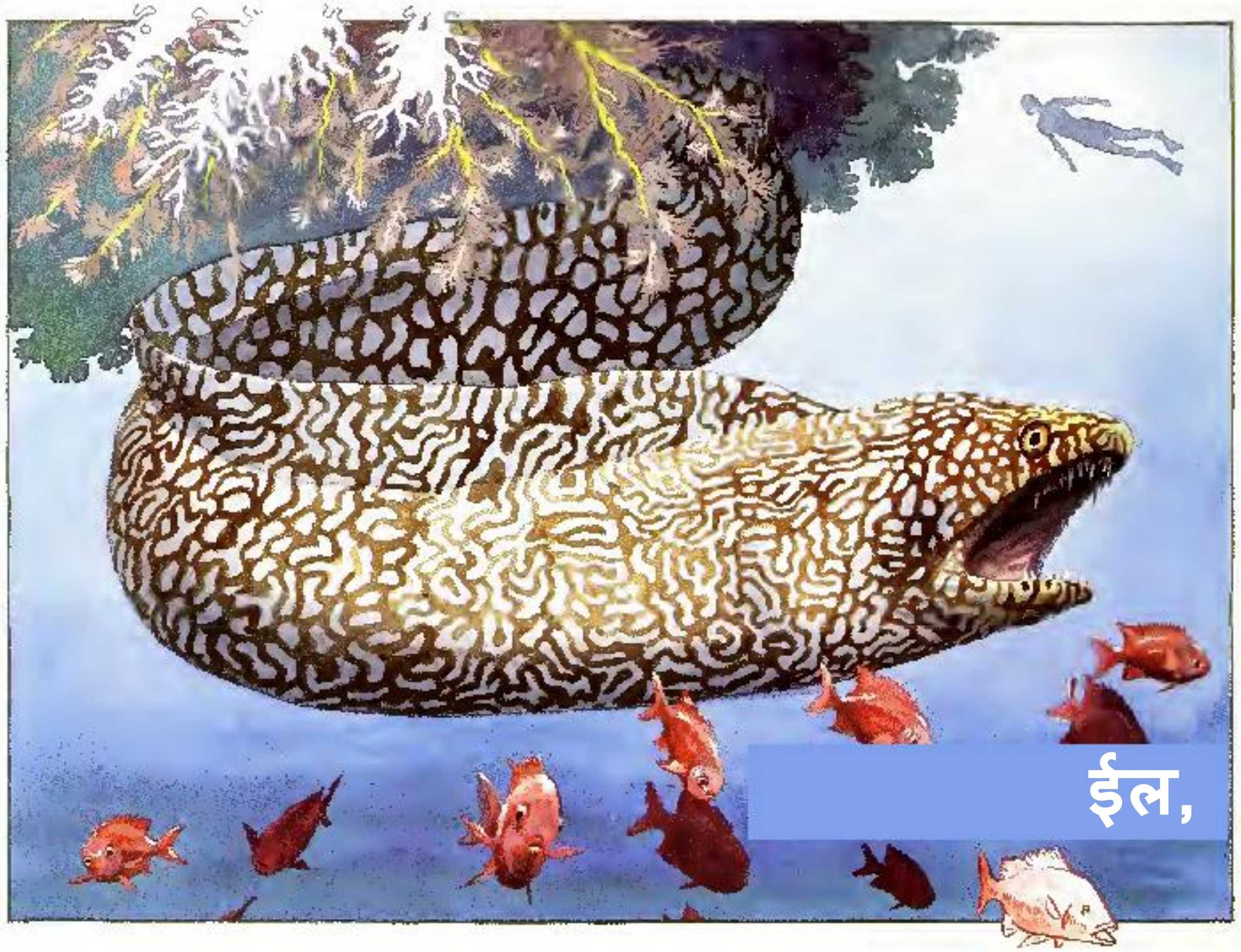

ईल, एक सांप नहीं होती

अगर आप कुछ लोगों से पूछें कि कोई चिपचिपा जानवर बताओ, तो वे शायद साँप का नाम लें। लेकिन वे गलत होंगे! साँप एक सरीसृप (reptile) होता है। सरीसृप की त्वचा सूखी और पपड़ीदार होती है— या अगर वह पानी में रहा हो तो गीली और पपड़ीदार— लेकिन कभी भी चिपचिपी नहीं होती। दूसरी ओर, ईल सरीसृप नहीं है— वह एक मछली है। और सभी मछलियाँ चिपचिपी होती हैं। अन्य मछलियों की तरह, ईल के शरीर पर भी शल्क होते हैं, लेकिन वे इतने छोटे होते हैं कि आप उन्हें देख भी नहीं सकते। और साँप के विपरीत, जो अपनी त्वचा उतारता है, ईल कभी अपनी त्वचा नहीं बदलती।

कुछ साँप अपना काफी समय पानी में बिताते हैं। पानी के साँप अच्छे तैराक होते हैं। लेकिन सभी सरीसृपों की तरह, उनके पास फेफड़े होते हैं और उन्हें सांस लेने के लिए ऊपर आना पड़ता है। उन्हें अपने अंडे देने के लिए ज़मीन पर भी आना पड़ता है— जहाँ वे सूखे, चमड़े जैसे अंडे देते हैं। लेकिन ईल, जैसे सभी मछलियाँ होती हैं, गलफड़े रखती हैं... ईल अपना पूरा जीवन पानी में बिताती हैं और वहीं अपने नरम, चिपचिपे अंडे देती हैं।

साँप अपने अंडे देने के लिए ज़्यादा दूर यात्रा नहीं करते। जब उनके बच्चे अंडों से निकलते हैं, तो वे बिल्कुल बड़े साँपों जैसे दिखते हैं— बस आकार में छोटे होते हैं। कुछ ईल, जैसे मीठे पानी की ईल, अपने घर—झीलों और नदियों—से बहुत लंबी दूरी तय करके समुद्र में अंडे देने जाती हैं। जब उनके बच्चे जन्म लेते हैं, तो वे न तो साँप जैसे दिखते हैं और न ही बड़े ईल जैसे। वे पारदर्शी और पत्ते जैसे दिखते हैं। समय के साथ, वे कई बदलावों से गुजरते हैं और धीरे-धीरे बड़े होकर वयस्क बनते हैं। लेकिन सबसे आश्चर्यजनक बात यह है— अपने छोटे, नए जन्म के रूप में ही, वे एक लंबी यात्रा पर निकल पड़ते हैं... वापस उन्हीं झीलों और नदियों की ओर, जहाँ से उनके माता-पिता आए थे। यह सच में एक अद्भुत यात्रा है!

सलामैंडर, छिपकली नहीं होता

रात के समय, जब आप नम (गीले) जंगल में टहल रहे हों और आपकी टॉर्च की रोशनी में कोई शांत, लंबी पूँछ वाला, छिपकली जैसा जीव दिखाई दे— तो ध्यान से देखिए... वह छिपकली नहीं है। वह एक सलामैंडर है। छिपकलियाँ सरीसृप होती हैं, जो आमतौर पर दुनिया के गर्म इलाकों में पाई जाती हैं— जैसे रेगिस्तान या वर्षा वन। उनकी त्वचा सख्त, सूखी और पपड़ीदार होती है। उनके पंजे होते हैं, और उनके आगे के पैरों में आमतौर पर पाँच उंगलियाँ होती हैं। अक्सर उनके बाहरी कान भी होते हैं। ज्यादातर छिपकलियाँ दिन के समय सक्रिय रहती हैं और कई तो धूप सेंकना भी पसंद करती हैं।

लेकिन सलामैंडर अलग होते हैं...वे उभयचर होते हैं— यानी ठंडे खून वाले जीव, जो पानी या नम जगहों में जन्म लेते हैं।

उनकी त्वचा चिकनी या दानेदार, बहुत नाजुक और नम होती है, जिसे सूरज से बचाना जरूरी होता है। इसी वजह से सलामैंडर आमतौर पर रात में सक्रिय रहते हैं। और भी फर्क हैं— छिपकलियों के विपरीत, सलामैंडर के आगे के पैरों में केवल चार उंगलियाँ होती हैं, उनके पास पंजे नहीं होते, और उनके बाहरी कान भी नहीं होते।

जब सलामैंडर छोटे होते हैं, तो उनके पास गलफड़े होते हैं और वे मछलियों जैसे दिखते हैं। लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं, वे बदलते जाते हैं—उनके पैर विकसित होते हैं और आमतौर पर उनके गलफड़े खत्म हो जाते हैं। कुछ सलामैंडर पानी में रहते हैं, कुछ जमीन पर, और कुछ दोनों जगहों पर रह सकते हैं। हालाँकि कई छिपकलियाँ तैर सकती हैं और कुछ पानी में भी रहती हैं, फिर भी आपको छिपकली ज़मीन पर ही ज्यादा देखने को मिलेगी— किसी पेड़ के तने पर, रेत में,या शायद किसी धूप से गरम हुई चट्टान पर आराम करते हुए।

एक पतंगा, तितली नहीं होता

अगर आप गर्मियों की एक सुहानी रात में बाहर जलती हुई रोशनी के आसपास कोई कीड़ा फड़फड़ाते हुए देखें, तो बहुत संभावना है कि वह एक पतंगा हो। हालाँकि कुछ पतंगे दिन में भी उड़ते हैं, लेकिन अधिकतर रात में सक्रिय रहते हैं। दूसरी ओर, ज्यादातर तितलियाँ दिन में सक्रिय होती हैं। उन्हें अपने शरीर को गर्म रखने के लिए सूरज की रोशनी की ज़रूरत होती है। इसी कारण, रात में सक्रिय रहने वाले पतंगों के शरीर तितलियों की तुलना में ज्यादा मोटे और रोएँदार होते हैं— क्योंकि वे सूरज की गर्मी पर निर्भर नहीं रह सकते।

तितलियाँ अक्सर पतंगों से ज्यादा रंगीन होती हैं, लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता। जब तितली उड़ती है, तो उसके रंग और पैटर्न आसानी से दिखाई देते हैं, क्योंकि बैठने पर वह अपने पंख ऊपर की ओर बंद रखती है। वहीं, पतंगे आमतौर पर आराम करते समय अपने पंख सपाट रखते हैं।

एक और महत्वपूर्ण अंतर है— उनकी एंटीना, यानी सिर पर मौजूद स्पर्श करने वाले अंग। तितलियों की एंटीना के सिरों पर छोटे-छोटे गोल उभार होते हैं, जबकि पतंगों की एंटीना ऐसे नहीं होती—वे या तो सीधी होती हैं या पंख जैसी दिखती हैं।

तितली और पतंगा—दोनों की शुरुआत एक छोटे से इल्ली के रूप में होती है। जब इल्ली पूरी तरह विकसित हो जाती है, तो वह एक प्यूपा में बदल जाती है— यह वह अंतिम अवस्था होती है जिसके बाद वह तितली या पतंगा बनती है। दोनों प्रकार की इल्ली रेशम बनाकर अपने प्यूपा को किसी टहनी या सहारे से चिपका सकती हैं। केवल पतंगे की इल्ली एक कुकून बना सकती है— यह एक मुलायम लेकिन मजबूत रेशमी खोल होता है, जो प्यूपा को ढकता है। कुछ कुकून बहुत कीमती होते हैं। रेशम का कपड़ा ऐसे ही एक रेशमी पतंगे के कुकून से बनाया जाता है। कुकून से रेशम बनाना तो जादू जैसा लगता है, लेकिन उससे भी ज्यादा अद्भुत है— एक बिना पंखों वाली, रेंगने वाली इल्ली का एक सुंदर, उड़ने वाली तितली या पतंगे में बदल जाना। यह सच में किसी जादू से कम नहीं है!

एक इल्ली, कीड़ा नहीं होती

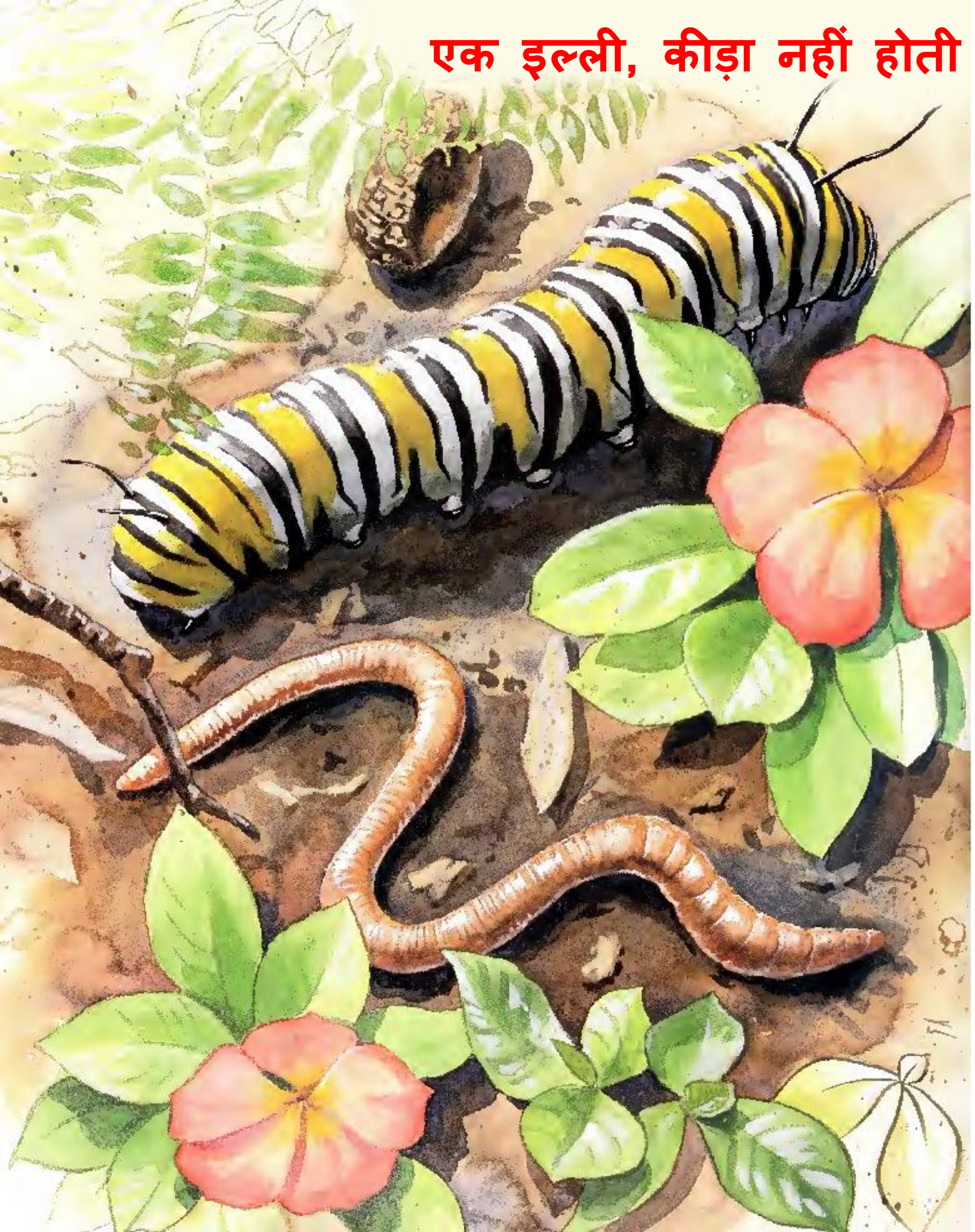

तुम्हारे सेब में जो "कीड़ा" दिखता है, वह सच में कीड़ा नहीं होता—वह एक इल्ली होती है। लोग अक्सर कीड़ों और इल्लियों को भ्रमित कर देते हैं, क्योंकि दोनों के शरीर लंबे, मुलायम होते हैं और उनमें रीढ़ की हड्डी नहीं होती। लेकिन अगर तुम ध्यान से एक केंचुए को देखो, तो समझना मुश्किल होगा कि उसका सिर कौन सा हिस्सा है और पूँछ कौन सी। और एक बात और—केंचुए के पैर नहीं होते। वहीं, तुम्हारे बगीचे में मिलने वाली इल्लियों के सिर साफ दिखाई देते हैं, और उनके पैर भी होते हैं।

बगीचे की इल्लियाँ दिन के समय सक्रिय रहती हैं, जबकि केंचुए आमतौर पर रात में ही बाहर आते हैं, क्योंकि तेज़ रोशनी उनकी संवेदनशील त्वचा को नुकसान पहुँचाती है। लेकिन सबसे बड़ा अंतर यह है—इल्लियाँ बदल जाती हैं... वे तितलियों या पतंगों में बदल जाती हैं, जबकि कीड़े हमेशा कीड़े ही बने रहते हैं।

इल्लियों के जबड़े मजबूत होते हैं, जिससे वे पौधों और अन्य चीज़ों को चबा सकती हैं। वे बहुत खाती हैं, तेज़ी से बढ़ती हैं, और तितली या पतंगा बनने से पहले कई बार अपनी त्वचा भी बदलती हैं। कुछ इल्लियाँ नुकसान पहुँचाने वाली होती हैं—वे तुम्हारे टमाटर के पौधों को कुतर सकती हैं। लेकिन कुछ इल्लियाँ हानिरहित या उपयोगी भी होती हैं, जो खरपतवार खाकर मदद करती हैं।

दूसरी ओर, केंचुए हमेशा फायदेमंद होते हैं। वे मिट्टी में रहते हैं और उसे निगलकर उससे पोषण प्राप्त करते हैं। इससे वे मिट्टी को ढीला और उपजाऊ बनाते हैं, जिससे बगीचा स्वस्थ रहता है। इल्लियाँ कभी-कभी बगीचे को नुकसान पहुँचा सकती हैं, लेकिन जब वे तितलियाँ और पतंगे बन जाती हैं, तो वही बगीचा सुंदर भी बना देती हैं।

कलहंस, बत्तख नहीं होते

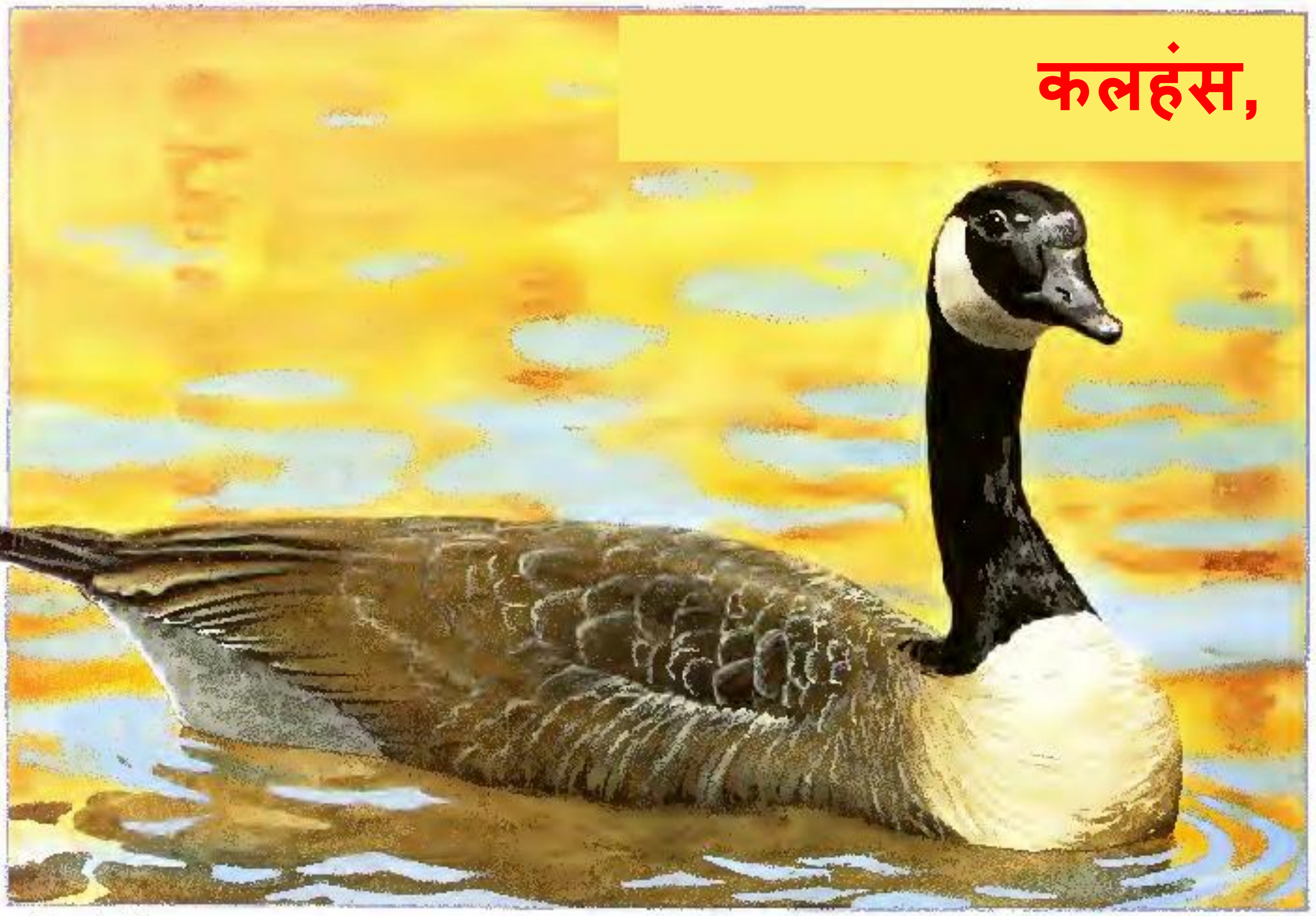

तुम्हारे कान तुम्हें कलहंस और बत्तख के बीच का अंतर बता सकते हैं। कलहंस “हॉन्क” (honk) करता है, जबकि बत्तख “क्वैक” (quack) करती है— और अगर वह सीटी बजाने वाली बत्तख हो, तो वह सीटी जैसी आवाज़ निकालती है। तुम्हारी आँखें भी तुम्हारी मदद कर सकती हैं।कलहंस आमतौर पर बत्तख से बड़े होते हैं, और उनकी गर्दन और पंख भी लंबे होते हैं। बत्तख की चोंच (bill) हंस की तुलना में ज्यादा चपटी होती है, और उनके रंग अक्सर ज्यादा चमकीले होते हैं। नर और मादा कलहंस लगभग एक जैसे दिखते हैं, लेकिन बत्तखों में ऐसा नहीं होता। नर बत्तख के पंख ज्यादा चमकीले और रंगीन होते हैं, जबकि मादा बत्तख साधारण दिखती है। कलहंस साल में एक बार अपने पुराने पंख गिराकर नए पंख उगाते हैं—इसे मोल्टिंग कहते हैं। लेकिन ज्यादातर बत्तख साल में दो बार ऐसा करती हैं।

कलहंस आमतौर पर जीवन भर एक ही साथी के साथ रहते हैं। मादा कलहंस एक बार में पाँच या छह अंडे देती है, और माता-पिता दोनों मिलकर अपने बच्चों की देखभाल करते हैं।

कलहंस के बच्चों को गॉसलिंग्स कहा जाता है। ज्यादातर बत्तख केवल एक मौसम के लिए ही जोड़ी बनाती हैं। मादा बत्तख कलहंस की तुलना में कहीं ज्यादा अंडे देती है, और अपने बच्चों— डक्लिंग्स —की देखभाल अकेले ही करती है।

कलहंस ज़्यादातर ज़मीन पर चरते हैं। वे शाकाहारी होते हैं, और उनकी मजबूत, ऊँची चोंच घास और पौधों को काटने के लिए बनी होती है। बत्तख आमतौर पर पानी में भोजन ढूँढती हैं। कुछ बत्तख केवल पौधे खाती हैं, जबकि कुछ मछली और अन्य जलीय जीव भी खाती हैं। अगर आप किसी झील के पास जाएँ, तो हो सकता है आप एक ऐसी बत्तख देखें जो मछली पकड़ने के लिए पानी में गोता लगा रही हो— जैसे मरगैंसर।

लेकिन हंस का तरीका अलग है— जैसे कनाडा गूज , वह हमेशा किनारे पर ही खाना पसंद करता है… और शायद आपके साथ भी!

एलिगेटर, मगरमच्छ नहीं होते

किसी इंसान की मुस्कान आपको बता सकती है कि वह दोस्ताना स्वभाव का है। लेकिन अगर आप किसी एलिगेटर (alligator) की मुस्कान देखें, तो वह आपको यह बता सकती है कि वह सच में एक एलिगेटर है! मगरमच्छ (crocodiles) और एलिगेटर दोनों ही बड़े सरीसृप (reptiles) होते हैं, जिनके बड़े-बड़े दाँत होते हैं। जब उनका मुँह बंद होता है, तो उनके दाँत जबड़ों के बाहर तक दिखाई देते हैं— जिससे ऐसा लगता है जैसे वे मुस्कुरा रहे हों। लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण अंतर है— एलिगेटर के मुँह में केवल ऊपर के जबड़े के दाँत ही दिखाई देते हैं। जबकि मगरमच्छ के मुँह में नीचे के दाँत भी ऊपर के दाँतों के साथ बाहर झलकते हैं। उनके चेहरे भी अलग होते हैं—मगरमच्छ की थूथन पतली और नुकीली होती है, जबकि एलिगेटर की थूथन चौड़ी और गोल होती है।

एलिगेटर बड़े और लंबे होते हैं, और उनकी आवाज़ भी बहुत तेज़ होती है— खासकर नर एलिगेटर की। वे दिखने और सुनने में काफी डरावने लगते हैं...

—और वे सच में हो भी सकते हैं। लेकिन वे आमतौर पर इंसानों को परेशान नहीं करते। मगरमच्छ, एलिगेटर से छोटा होता है और उसकी आवाज़ भी उतनी तेज़ नहीं होती। लेकिन एक बात ध्यान रखने वाली है— मगरमच्छ ज़मीन पर ज्यादा तेज़ होते हैं और ज्यादा आक्रामक भी। इसलिए उनके हमले की संभावना अधिक होती है।

मगरमच्छ और एलिगेटर दोनों ही बहुत ताकतवर शिकारी होते हैं, लेकिन वे अपने बच्चों के प्रति बहुत अच्छे और देखभाल करने वाले माता-पिता भी होते हैं। एलिगेटर, जो केवल चीन और अमेरिका के कुछ हिस्सों में पाए जाते हैं, अपने अंडों के लिए पौधों और मिट्टी से घोंसले बनाते हैं। दूसरी ओर, मगरमच्छ—जो दुनिया के कई स्थानों पर पाए जाते हैं— रेत या सूखी मिट्टी में अपने अंडों के लिए गड्ढे खोदते हैं। चाहे मगरमच्छ हो या एलिगेटर, दोनों अपने अंडों और बच्चों की बहुत रक्षा करते हैं। अगर आप कभी किसी को उसके घोंसले के पास "मुस्कुराते" हुए देखें, तो सावधान रहिए! क्योंकि न तो मगरमच्छ और न ही एलिगेटर की मुस्कान वास्तव में दोस्ताना होती है... वह तो बस उनके दिखने का तरीका है।

कोआला, भालू नहीं होते

कोआला देखने में तुम्हारे प्यारे टेडी भालू जैसा लग सकता है, लेकिन वह बिल्कुल भी भालू नहीं है! असल में, कोआला एक शिशुधानी (marsupial) है— जैसे कंगारू, वॉम्बैट और ओपॉसम। ये अपने बच्चों को अपने शरीर की एक थैली (pouch) में रखते हैं। छोटे कोआला गर्मियों में जन्म लेते हैं और लगभग छह से आठ महीनों तक अपनी माँ की थैली में रहते हैं। उसके बाद वे कुछ और महीनों तक अपनी माँ की पीठ पर सवारी करते हैं। भालू ऐसे नहीं होते। उनके पास कोई थैली नहीं होती। उनके बच्चे ठंड के मौसम में एक मांद (den) में जन्म लेते हैं, जहाँ माँ सर्दियों में सोने जाती है। ज्यादातर भालू—नर और मादा दोनों— सर्दियों में मांद में रहते हैं। लेकिन कोआला ऐसा कभी नहीं करते।

भालू और कोआला आकार में भी बहुत अलग होते हैं। भालू बड़े और ताकतवर होते हैं। वे लगभग तीन से नौ फीट तक ऊँचे हो सकते हैं और उनका वजन साठ पाउंड से लेकर सत्रह सौ पाउंड तक हो सकता है। वहीं, सबसे बड़ा कोआला भी केवल ढाई फीट के आसपास होता है और उसका वजन तीस पाउंड से भी कम होता है। भालू और कोआला दोनों पेड़ों पर चढ़ सकते हैं...

भालू अपना ज़्यादातर समय ज़मीन पर बिताते हैं। वे चारों पैरों पर चलते हैं और कभी-कभी दो पैरों पर खड़े भी हो जाते हैं। लेकिन कोआला अलग होते हैं— वे अपने पैरों को सपाट रखकर नहीं चलते, और सच कहें तो वे बहुत कम चलते हैं। वे अपना अधिकतर समय पेड़ों की ऊँचाई पर बिताते हैं, जहाँ वे चढ़ते हैं, सोते हैं और खाते हैं।

कोआला केवल एक ही प्रकार का भोजन खाते हैं— नीलगिरी (eucalyptus) के पेड़ों की पत्तियाँ। वे इन पत्तियों से ही अपना पानी भी प्राप्त कर लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया और उसके आसपास के द्वीपों में नीलगिरी के पेड़ बहुत पाए जाते हैं— यही वह जगह है जहाँ कोआला रहते हैं। लेकिन भालू पूरी दुनिया में पाए जाते हैं और वे हर तरह का भोजन खाते हैं— फलों और शहद से लेकर मांस तक। आपको कभी यह चिंता नहीं करनी पड़ेगी कि कोई कोआला आपका नाश्ता चुरा लेगा। लेकिन अगर आप ऐसे स्थान पर कैंपिंग करने जाएँ जहाँ भालू हों, तो अपना खाना अच्छी तरह सुरक्षित रखना जरूरी है!

बगुला(heron) एक ऐसा पक्षी है जिसकी गर्दन लंबी होती है, चोंच लंबी होती है, और पैर भी लंबे होते हैं। उसे अक्सर पानी में खड़े होकर चलते देखा जाता है। सारस(stork) भी एक ऐसा ही पक्षी है— उसकी गर्दन, चोंच और पैर भी लंबे होते हैं और वह भी पानी में खड़ा रहता है। तो फिर फर्क कैसे समझें?

सारस आमतौर पर बगुलों से ज्यादा भारी और मोटे होते हैं। उनकी गर्दन और चोंच भी ज्यादा मोटी होती है, जो सीधी या मुड़ी हुई हो सकती है। कई सारस पानी में अपनी बड़ी चोंच डालकर चारों ओर टटोलते हुए भोजन ढूँढते हैं। वहीं, बगुले पतले और हल्के होते हैं। उनकी चोंच सीधी और बहुत नुकीली होती है। कई बगुले एक जगह स्थिर खड़े रहते हैं, पानी को ध्यान से देखते हैं, और फिर अपने शिकार को तेज़ी से अपनी नुकीली चोंच से पकड़ लेते हैं।

बगुलों के सिर, गले और पीठ पर लंबे, सुंदर पंख भी होते हैं, खासकर प्रजनन के समय। सारस के पास बगुलों जैसे लंबे, सजावटी पंख नहीं होते। कई सारस के सिर तो बिल्कुल बिना पंखों के भी होते हैं।

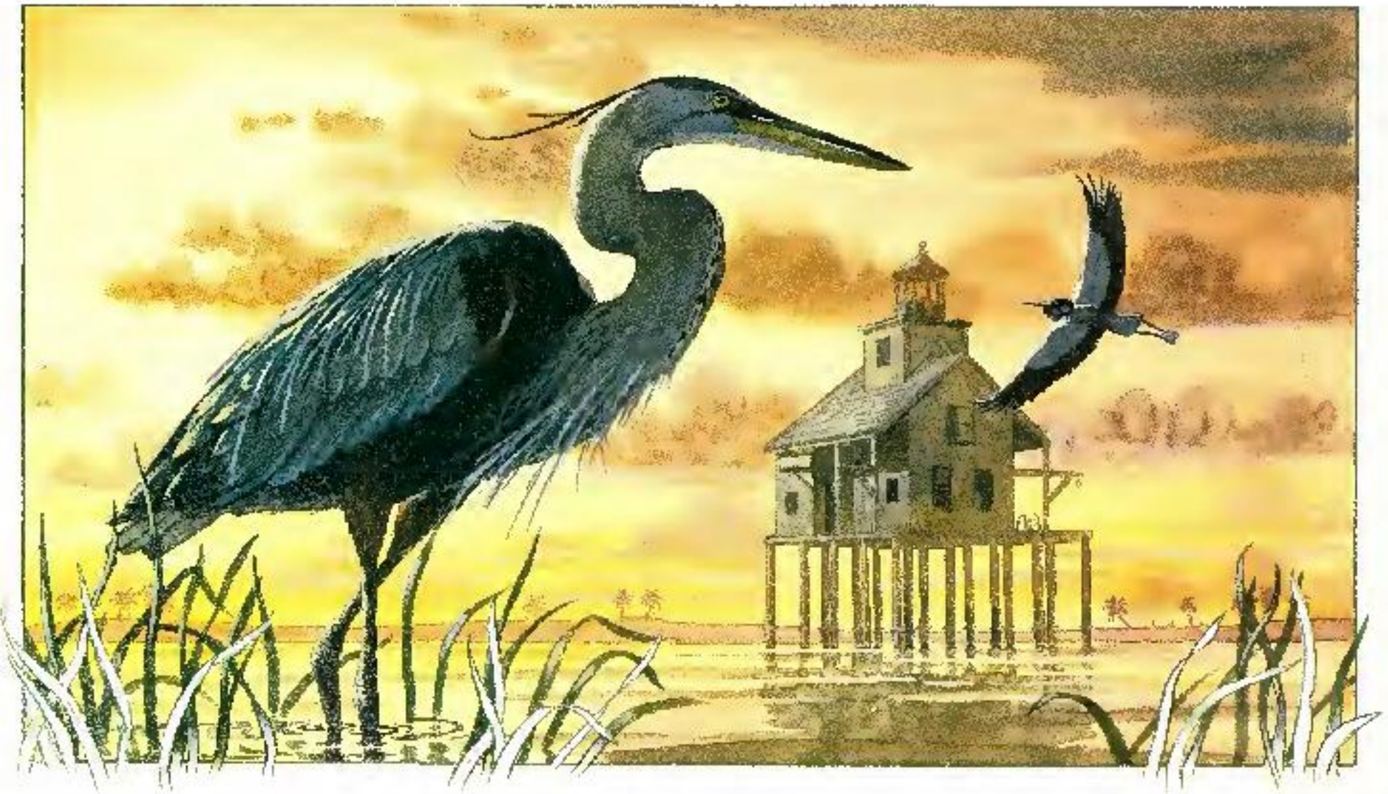

बगुला, सारस नहीं होता

उड़ते समय भी ये दोनों पक्षी अलग दिखते हैं— सभी सारस उड़ते समय अपनी गर्दन को सीधा फैलाकर रखते हैं। लेकिन बगुले ऐसा नहीं करते। वे उड़ते समय अपना सिर कंधों के बीच में खींच लेते हैं और अपनी गर्दन को “S” आकार में मोड़ लेते हैं।

आप इन दोनों को उनकी आवाज़ से भी पहचान सकते हैं। बगुले अक्सर उड़ते समय जोर से “कर्र-कर्र” जैसी आवाज़ निकालते हैं। लेकिन कई सारस लगभग चुप रहते हैं। कुछ ही सारस अपने घोंसलों के पास थोड़ी-बहुत आवाज़ करते हैं। असल में, सारस आपस में बात करने के लिए अपनी चोंच के दोनों हिस्सों को आपस में टकराते हैं— जिससे “टक-टक” जैसी आवाज़ आती है।

बगुले और सारस दोनों ही पेड़ों पर घोंसले बनाते हैं। लेकिन कुछ सारस जैसे सफेद सारस (white stork), जो यूरोप और अफ्रीका में पाए जाते हैं, चिमनियों और छतों पर भी घोंसला बनाते हैं। अगर आप कभी किसी चिमनी पर दो बड़े सफेद पक्षियों को एक-दूसरे के साथ “टक-टक” करते देखें, तो हैरान मत होइए— आपने अभी-अभी एक सारस की जोड़ी देखी है!

भेक (Toad) मेंडक नहीं होता

भेक (toad) की त्वचा भले ही उभरी हुई (warts) हो, लेकिन वह आपको मस्से (warts) नहीं देता! और न ही मेंढक देता है। मेंढक और भेक को पहचानना कभी-कभी मुश्किल होता है, यहाँ तक कि वैज्ञानिकों के लिए भी। लेकिन कुछ अंतर होते हैं— सच्चे भेक जैसे अमेरिकन टोड, आमतौर पर सूखी और उबड़-खाबड़ त्वचा वाले होते हैं। जबकि सच्चे मेंढक, जैसे बुलफ्रॉग, अधिक गीली और चिकनी त्वचा रखते हैं। मेंढकों के पैर लंबे होते हैं, जिससे वे लंबी छलांग लगा सकते हैं। उनका शरीर भी पतला और सुडौल होता है। वहीं, भेक के पैर छोटे होते हैं, और वे ज्यादा ऊँचा नहीं कूदते— वे बस छोटे-छोटे उछाल (hop) लगाते हैं। भेक का शरीर भी ज्यादा गोल-मटोल और चौड़ा होता है। एक और अंतर है— मेंढकों के ऊपरी जबड़े में छोटे-छोटे दाँत होते हैं, जिससे वे अपने भोजन को पकड़ते हैं। लेकिन दादुर के पास दाँत नहीं होते।

मेंढक और भेक दोनों ही उभयचर (amphibians) हैं। वे पानी या नम जगहों में प्रजनन करते हैं। उनके बच्चे, जो मछली जैसे दिखते हैं, टैडपोल (tadpoles) कहलाते हैं। ये टैडपोल बहुत खाते हैं, धीरे-धीरे उनके पैर निकलते हैं, पूँछ गायब हो जाती है, और वे छोटे मेंढक या भेक बन जाते हैं। बड़े होने पर, अधिकतर मेंढक अपना समय पानी में या उसके पास बिताते हैं, जबकि भेक आमतौर पर ज़मीन पर रहते हैं— हालाँकि उन्हें भी कभी-कभी पानी में नहाना पसंद होता है।

मेंढक कई जानवरों के लिए स्वादिष्ट भोजन होते हैं— यहाँ तक कि कुछ इंसानों के लिए भी! लेकिन भेक ऐसे नहीं होते। वे एक कड़वा तरल (bitter fluid) छोड़ते हैं, जो उन्हें काटने वाले जानवर के मुँह में जलन पैदा करता है। खुद को बचाने के लिए, मेंढक अक्सर टर्राते हैं, कूदते हैं, तेज़ी से तैरकर दूर निकल जाते हैं या छिप जाते हैं। पानी में उन्हें देख पाना मुश्किल होता है, क्योंकि उनका रंग अक्सर पानी के पौधों जैसा होता है। और भेक? उन्हें जंगल में ढूँढना भी आसान नहीं होता— क्योंकि उनका रंग मिट्टी, पत्थरों और पत्तों में इतनी अच्छी तरह घुल-मिल जाता है।

वनमानुष (Chimpanzee), बंदर नहीं होते

अगर आप चिड़ियाघर जाएँ, तो आप किसी बंदर को उसकी पूँछ से लटकते हुए देख सकते हैं। लेकिन आप कभी भी एक चिंपैंज़ी (chimpanzee) को ऐसा करते नहीं देखेंगे— क्योंकि उसके पास पूँछ होती ही नहीं! सभी बंदरों के पास पूँछ होती है, लेकिन चिंपैंज़ी बंदर नहीं होते। वे एप (apes) होते हैं— और किसी भी एप के पास पूँछ नहीं होती।ओरंगुटान, गोरिल्ला और गिबन भी एप होते हैं। एप आमतौर पर बंदरों से बड़े होते हैं। उनकी भुजाएँ उनके पैरों से लंबी होती हैं, और वे ज्यादा सीधे चल सकते हैं। जब वे चारों पैरों पर चलते हैं, तो वे अपने हाथों की हथेलियों पर नहीं, बल्कि उंगलियों के पोर (knuckles) पर सहारा लेते हैं।

कई बंदर पेड़ों की ऊँचाई पर रहते हैं— वहीं खाते हैं, खेलते हैं और सोते हैं। लेकिन चिंपैंज़ी अपना अधिकतर समय ज़मीन पर बिताते हैं। सिर्फ रात में वे पेड़ों पर चढ़कर पत्तों और टहनियों से अपना घोंसला बनाते हैं। और खास बात— चिंपैंज़ी कभी भी एक ही घोंसला दो बार इस्तेमाल नहीं करते। वे हर शाम नया घोंसला बनाते हैं।
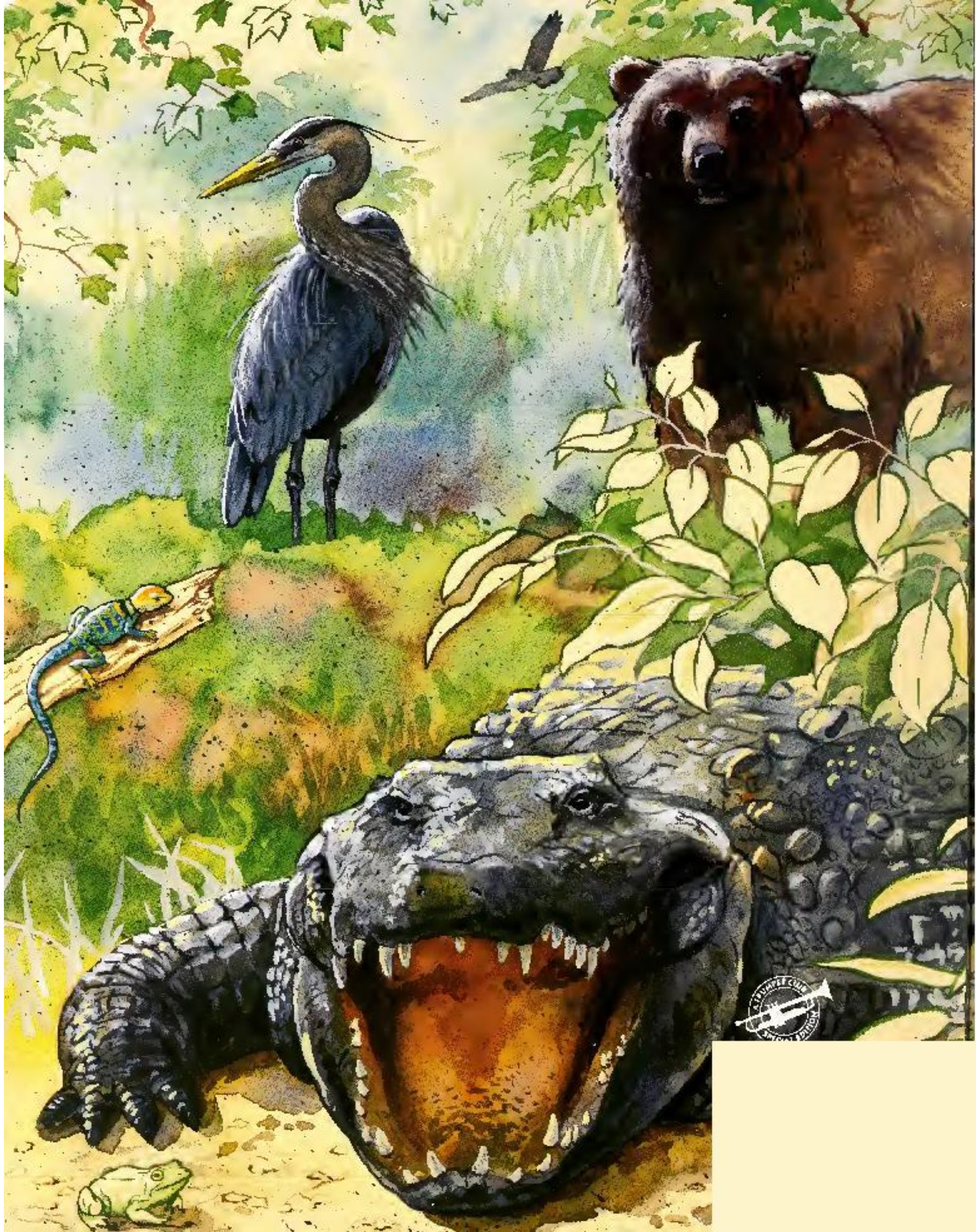
बंदर बुद्धिमान होते हैं, लेकिन चिंपैंज़ी उससे भी ज्यादा समझदार होते हैं। उनका दिमाग बहुत विकसित होता है— शायद इंसानों के अलावा सभी स्तनधारियों में सबसे ज्यादा। असल में, वे सभी जानवरों में इंसानों से सबसे ज्यादा मिलते-जुलते हैं। चिंपैंज़ी सरल औज़ार (tools) बनाना और उपयोग करना जानते हैं। उदाहरण के लिए— वे पत्तों को चबाकर एक छोटी गेंद बना लेते हैं और उसे स्पंज की तरह इस्तेमाल करके पानी पीते हैं। इंसानों ने चिंपैंज़ी और उनके रिश्तेदार गोरिल्ला को संकेत भाषा (sign language) भी सिखाई है। ये एप आसानी से शब्द सीख सकते हैं और वाक्य भी बना सकते हैं। सोचिए...आप एक चिंपैंज़ी से बातचीत कर सकते हैं! लेकिन... आप कभी भी किसी बंदर के साथ ऐसा नहीं कर पाएँगे।